9. खोरठा लोककथाञ समाज

महान दार्शनिक अरस्तुञ कहल हथ 'मनुष्य एगो सामाजिक जीव (प्राणी) लागे। ऊ समाज में जनम लेहे, पलहे, बढ़हे आर हर रकम कर काम कइर के विकास करहे आर हिये मोरहे। समाजेक बिना मनुस कर कल्पना करनाय आ बेकार हे। कोइयो मानुस एकले रइहके कुछ नाञ कइर सकहे, ओकरा ककरो ना ककरो मदइत लिये हे पड़ हे। समाज से फरक रहवइया मनुस (अदमी) नाञ पसु हेइ सकहे इया देवता।

बनावटेक नजइरे देखल जाय तो 'सम+अज' से समाज बनल हे, हियां सम कर माने एक इया इकठा आर अज कर माने हे निवास करेक। ई नीयर समाज कर साब्दिक माने हेल एक संगे रहेक बा निवास करेक। साधरन बोलचाले समाज के माने हे लोकेक समूह किन्तु अइसन सोचेक टा एकदम भ्रम हे। काहे कि खाली लोकेक समूह के समाज नाञ कइह सकही। सही माने में, समाज सबदेक प्रयोग कइ रूपे हेव हे। भारतेक परम्पराक मुताबिक गोटा विश्व एक समाज हे आर एहे ले ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' कर नारा देल गेलहे। एकर उलटा समाज सबद कर माने आपन जाइत इया धरम तइक सीमित राख हथ तो कोई आपन आस पासेक पड़ोसी तइक। वास्तव ई सोब भ्रमयुक्त हे।

समाज कर परिभाषा कई बिदुवाने आपन आपन ढंगे देल हथ, ओकर में हियां एक दू झन कर देल परिभासा राखल जाइ रहल हे। –

मेकाइवरेक मुताबिक 'मनुष्य का मनुष्य के साथ ऐच्छिक सम्बन्ध ही समाज है लास्कीक अनुसारे – ''समाज मनुष्यों का एक समूह है जो पारस्परिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाया गया है।''

जे बा हे लोकेक समूह के समाज कहल जाहे, किन्तु आकस्मिक आर अस्थायी समूह समाज नाञ कहाहे। जइसे रेलगाडीञ बइठल लोक समाज नाञ हे।

समाज कर हेठे लिखल तत्व पावल जाहे :–

(1) बिसाल जनसमूह (2) समान उद्देश्य (3) शक्ति आर सहयोग भाव से रहेक बा जीनगी जीएक इच्छा, समाजेक संगठनात्मक रूपे परिवार, वर्ग, जाइत, धम आर देश मुइखहे।

आब एकर छोट मोट परिचय

1. **परिवार** – परिवार समाजेक सोबले छोट मगुर पहिल (प्रथम) ईकाई लागे, जहाँ छउवा रूप लोक जनम लेहे, पले हे, बढ़े हे आर आपन जिनगी के विकास कइर के संवारे हे। हियां ऊ पारस्परिक स्नेह, सहयोग सहिष्णुता सेवा भावना अनुसासन आदि सामाजिक काम सीख हे। सेले परिवार के सामाजिक जीवनेक पहिल (प्रथम) आर सर्वोत्तम पाठशाला कहल गेल हे।
2. **वर्ग**–कोनो व्यवसाय इया कामेक आधारे बाँटल गेल संगठनात्मक रूप के वर्ग कहल जाहे। शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, कलाकार हेन तेन बेवसायेक आधारे एक–एक वर्ग लागे, जे आपन–आपन छेतरे सामाजिक गुणकर विकास करे में विसेस जोगदान देहे।
3. **जाइत**–जीवनेक जरूरतेक मुताबिक आदि परियाञ कामेक आधारे जाइत बाँटल गेल रहे, फिन कामक के छोइड़ कर जनमेक आधारे जाइत बाँटल गेल हे। हर जाइतेक आपन–आपन खास गुन हे। जे एक दोसर के बाँट हे ।
4. **धरम**–परब–तेवहार, बेस–बेकार आदि धरमेक आधारे बाँटल गेल हे। धरम आर ओकर समुदायेक लोक सामाजिक जीवनेक एकता के मजबूत आर सकत कइर के राख हे।
5. **राष्ट्र**–राष्ट्र बा देश एगो मजबूत सामाजिक समूह लागे जहाँ एकताक भावना महत्वपूर्ण हे।

मानुस (मानव) आखेट जुग, पशुपालन जुग,कृषियुग हेते करते आइते आइक इ औद्योगिक वैज्ञानिक युग में पोहचल हे मगुर लोक कथा तो आदिकाल से मौखिक परम्पराञ पीढ़ी दर पीढ़ी चलइत आइल हे। लोककथा साहितेक एगो रूप लागे आर साहित समाजेक दर्पन कहा हे। जोन कहनी (लोककथा) जहिया गढ़ल गेल बा रचल गेल, तहियाक छाप तो देखाबे करत।

आवा जाहिक सुबिधा नाञ रहल कर चलते आदि परियाक समाज सीमित रहे। जकर बेसी विकास ऊ सइभ हेल जकरा बादे आइर्ज कर नाम देल गेल आर जे असइभ रहल उफ अनाइजे कहाइल। जे बाहे लोककथा शिष्ट आर अतिशष्ट दुइयों रूपे पावा हे। कहेक माने हे जे लिखित रूपे पावाइल ऊ शिष्ट कथा बा कहनी कहाइल। पंचतंत्र, हितोपदेश कथा सरित्सागर आदि शिष्ट कहनीक प्रतिनिधित्व कर हे मगुरलोक कथा गँवइया अनपढ़ समाज कर प्रतिबिम्ब लागे।

भारते सुरूवे से पुरूस प्रधान बा पितृ प्रधान समाज पावल जाहे। हियां आपन परिवार के चलवे खातिर बिहा कइर के 'नारी' के लानल जाहे। छउवा जनमवे आर घार चलवेक दायित्व हे। ई हर रकमेक लोककथाञ पावल जाहे।

खोरठा लोककथाञ पावल जाइक समाज पूरा पूरी आग्याकारी पितृ प्रधान समाज रहे जहाँ बेटी के जकर संग बिदा कइर दे, ऊ खुसी–खुसी चइल जाइक। बापेक आग्यां के बेटा–बेटी दुइयो समान रूप से मान हलथ। बेटा बापेक कहल पर घार छोइड देहल। सइतीन डाह से ग्रसित जनी सइतीन बेटा के जान से मारे खातिर कतेक बहाना कर हीक। मालिकेक बा मालकीनेक बात माने ले नोकर तइयार रहे चाहे काम बेस रहे बा बेकार उचित रहे इया अनुचित। छउवा के जान से मारे में नोकरे संग देहल। ई नीयर परिवार कर हर सदस्य आग्याकारी हेवत। परिवार में माँय–बेटा में प्यार, जनी–मदर में प्रेम, भाय–भाय में प्रेम, भाइ–बहिन में प्रेम परक खोरठाञ अनगुड़ लोककथा पावल जा हे।

बाप से बेटा इया बेटी से कुछ सवाल पूछल जाहे, बापेक अनुकूले जवाब नाञ पावल पर ऊ दंड पाव हल। खोरठाञ अइसन समान अभिप्राय तत्व कर कइगो कहनी पावल बा सुनल जाहे। प्राइ ई देखल जाहे कि छोट बेटा इया छोट बेटी इया छोट पुतउ ढेइर होसियार, होनहार (हुनरगर) बुइधगर बेवहार कुशल आर कर्मनिष्ठ अइसन गुन से मोरल पुरल पात्र धीरोदात नायक बा नायिका क रूपे चित्रित पावा हे। बापेक दवारा प्रताड़ित आर निष्कासित बेटा इया बेटीए आखरी पहरे बापेक सेवा करे हे। अइसन समान अभिप्राय तत्व कर अड़गुड़ कहनी खोरठाञ पावा हे ।

छोट पुतउ ओइसने गुनगइर देखल जाहे। ऊ आपन ससुर के खोवल धन सम्पइत घुरावे में वापस पावे में सफल हेकहीक, अइसन कहनीयों ढेइर हे।

खोरठा लोककथाञ जोन राजाक बात आवहे ऊ कोन्हों बोड़ इया देस कर राजा नाञ मगुर गांवेक बोड़ लोक हेवहे। मेने गावक धनी लोक के राजा रहल जा हल। हर कहनीञ इया ढेइर कहनीञ ई रहहे कि ''एगो राजा रहे, तकर .....'' राजा ताकतवर नाञ रहे आर वन होसियार से ले कइगो कहनीञ ई देखल जाहे कि अइसन राजा एगो गरीब कमजोर इया निहायत अलाइग गोरखिया से ऊ हाइर जाहे।

हियाँ राजा में सामन्ती आर एय्यासी प्रवृत्ति गुन पावल जाहे, मगुर ऊ मुरूख रहल कर चलते साधारन लोक से माइर खा हे।

'बितना' कहनीञ बिता अइर के बितना कइसे राजा के मुरूख बनाइके आर डूबाइक के मोरावे हे। 'तिरिया चरितर' कहनीञ कमिया–धंगरेक बहु कइसे राजा के मुरूख बनाइके

'चोरभूता' देखहीक। इ खोरठाक ढेइर कहनीञ नारीक चरितरे पतिव्रता रूप देखवल गेल। नारी कइसने रहीक, राजाक बहु रहीक चाहे धंगरेक / गोरखियाक बहु ऊ आपन पति के बचावेक हर रकमेक उपाय करहीक। हियाँ नारीक गुन (चरित्र) के ऊँच थान (जगह) देल गेल हे। आदर्श पत्नीक चरित्र 'सुख कहाँ, केतकी फूल, छठी राइतेक बोर, तिरिया चरितर, चितरा रानी, अइसन कहनीञ पावल जाहे। 'सेर कर सवा सेर' कहनीञ अभिमानी पतिकर अभिमान सहज ढंग से दूर करहीक, सावित्री–सतवान में सावित्री कइसे जमराज से पतिक जान वापस लेइ लेहीक। ई सबमें नारीक आदर्श चरित्र झलक हे। बिधि कर बवल पहिलेक नियम के संशोधन करल से आर ओकर अनुसारे चलेक कोसिस करल से जमदूतो के माराइ पड़ हे। एगो गरीब बढ़इ मिस्त्री से कइसे जमदूत कइद हेइ जा हे आर मोइर जाहे। हियां जमदूतो के एगो सामाइन लोक नीयर बुइध देखवल गेल आर बढइ मिस्त्री कतना तेज रहे कि जमदूत के बुड़बक बनाइ देहे। मगुर दारू पीयल बादे ओहे गोपनीय बात के कइह सुनाइ देहे।

ई जगजाहिर हे कि मानुस (मनुष्य) जतना शिष्ट हेवत ओकर समाज ओतना उन्नत हेवत, आदर्श हेदथ। सामाजिक नाता–रिस्ता ऊपर से नाञ आव हे मुदा हिये बनवल जाहे। खोरठा लोककथाक समाज में समता, स्वतंत्रता आर सहभागिताक रूप रहे। हियां स्त्री–पुरूष, बेटा–बेटी में फरक नाञ बुझल जा हल। जे नीयर बाप बेटा–बेटीक जे कहे ऊ माने पड़हल आहे नीयर बेटी जकरा पति माइन लेहलीक ओकर संग बिहा हेइ जाहल। 'स्वयंवर' कर बात कहनीञ पावाहे बा स्वयंबरे हाथी जकर पर माला डाइल दे राजाक बेटी के बिहा करे पड़हल।

राकस कनिया (कन्या) इया परी कनियाउ मानव संग बिहा करे ले राजी हेले ओकर माँय–बाप के माने पड़ हल। ई सबों बिहा करल बादे आदर्श पत्नीक गुन निभाव हलथ।

समाज में वर्ण–व्याख्याक बात रहे मगुर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आर शुद्र कर बात नाञ रहे। अमीर–गरीब तो रहथ मगुर सोब किसान रहथ। बाभनेक नाम ;पइकरा माँगा पाँडे कर कहनी पावाहे। जइसन कि आइझो–काइल गया कर पंडा सब पँइंकरा माँगे ई झारखण्ड आव हथ। खोरठा लोककथाञ जोन समाज कर रूप पावाहे ओकर जातीय वेवस्थाक बात तो कम मगुर मोटा–मोटी पाँच पउनी में लोकेक आवसकताक (जरूरतेक) मोताबिक पाँडे, नउवा,धोबी, कमार (करमाली) मोची ई सब कर बात हे जे काम के आधरे बाँटल गेल रहे।

मोटा–मोटी देखल जाय तो खोठा लोककथाञ वर्णित समाज कुरमी समाज आर संस्कीरतिक अनुरूप हे। कतेक विदुवान सभे कहल हथ कि ई झारखण्डे सोबले आगु कुरमी 'जाइते आइल रहय आर ओकरे लानल लोककथा हियां सुनवल जाहे।

10. लोककथाञ कथक्कड़ कर भूमिका

'कथक्कड़' शब्द 'कथ्' धातु में 'अक्कड' प्रत्यय कर मेल से बनल हे, जकर माने हे 'कहवइया'। लोककथा क्षेत्र में लोककथा (कहनी) कहवइया के 'कथक्कड़' कहल गेल हे। जे नीयर किसान अनाज उपजावहे आर बचाय के, जोगाय के राखहे ओइसने 'कथक्कड़' आपन पास कहनी के बचाय राखहे। चूँकि ई कहनी पीढ़ी–दर–पीढी, कंठ–ब–कंठ मौखिक परम्परा से चलइत आइल हे। एकर मुइख कारण हे इयाद (स्मरण) राखेक क्षमता। दोसर से सुनल बात के दूसर ठीन सुनावे में कहूँ भूलाय नी जाय। हाँ जदि ढ़ेइर कोय रहल पर ककरो नी ककरो इयाद जरुर रहहे आर पुनरावृतिक पहर गलती करल पर टोइक दे हे। हाँ ई बात कोय जरुरी नखे कि कहवइया के कहनी सुनवे खातिर कोनो ताम–झाम करेक

हई किंबा कोनो तइयारी करेक हई, मुदा बाते–बाते इया गपे–गपे बात के छेड़ देल जाहे आर पटतइर (दृष्टान्त) रुपे कहनी सुनवल जाहे। ई कहनी उपदेशात्मक/शिक्षाप्रद हइ सकहे। मनोरंजन के नजइरे सुनवल जायेक कहनी मनोरंजनात्मक हेवहे। राजाक बिगड़ल बेटा सब के ठीक डहरे (सही मार्गे) लाने खातिर **'पंचत्रंत'** किताब बनवल गेल हे। राजा से धन पावेक खातिर कहनी राजा के सुनावल जाहल। कखन्हु–कखन्हु सुनल कहनी से राजाक जान बची जाहे। अइसन कतेक कहनी ई लोक जीवन में छिपल हे जइसन समुंदर में मोती। खाली चेस्टा हेवेक चाही ओकरा पावेक, ग्रहण करेक।

कहनी सुनावेक में 'कथक्कड़' के धेयान राखे पड़हे कि ऊ कइसन कहनी कहत, जे बेसी आनन्द देत। एकर में कखन्हु–कखन्हु ऊ सब मरीच–मसाला डालहथ, बेसी मनोरंजक आर आकर्षक बनवेक खातिर।

मगुर लोकसाहित्य मर्मज्ञ विद्वान सब सलाह देले हथ कि ओकर में कोय तरह से छेड़–छाड़ नाञ् हेवेक चाही। अभिप्राय तत्व लोककथाक जान (प्राण) लागे ओकर बचाय राखेक चाही।

आइज कहनी सुनवइया कम हेल जाइ रहल हथ, काहे कि टीवीक जुगे, फिल्मी कहनी देखे–सुने में बेसी रुचि देखवल जाहे, कहनी सुने ले कोय तइयार नाञ्। हाँ लोकभासाक पढ़ाय भेल से आर लोककथा के पाठ्यक्रम में राखल गेल से 'लोककथा' लिखेक परिपाटी शुरु हेल। एकर खातिर आइझ लिखवइया के ई बात के धेयान दिये ले कहल जाहे कि लोककथाक अभिप्राय तत्व (कथानक) में कोय छेड़–छाड़ नाञ करल जायेक चाही। शैली में भले मिर्च–मसाला डालल जाय सकहे।

11. लोककथाक महत्व

लोककथा लोक जीवन आर लोक संस्कृति कर आइना हे, जकर में ई सब कर जींयत तस्वीर देखा हे। लोककथा में हर रकम कर घटना वर्णन पावल जाहे, एकरा कल्पनाक गुड़ी (पतंग) कहल जाए पारे, जकर पकड़
धरातले में रहहे। एकर में ढेइर सिखावन बात समझवल जाहे, एकर से भटकल राही के नावां राह मिलहे। निरास अदमी के आसाक रंफ मिलहे। हाम एगो अइसन लोककथा सुनलही जकरा खुद हाम आपन नजइरे देखली आर भुक्तभोगी बनली। एकरा आइझ कोइयो भोइग सकहे। ऊ हे –

''सियान बेटी के घारे राखे, ऊ कौड़िक तीन
बिन लिखा–पढ़ी के पइसा दे, ऊ कौड़िक तीन
बिन मांगले मदइत करे जे, ऊ कौड़िक तीन।''

ई सूक्तिपरक कहनी भले राजा विक्रमादित्य से जुडल हे, मगुर जे हामरा सुनावल रहत, ऊ साइदे विक्रमादित्य कर कहनी पढ़ल हेता, इयानि लोककथाक रुप्ही सुनल हेता। अइसने कते कहनी हे जे अदमी के डहर देखावहे।

आइझ लोककथा विलुप्त हेइ रहल हे एकरा बचाय राखेक दरकार हइ।

1. राजाक पुतउ आर पाँच राही

एगो राजा रहे। ऊ कोन बुइधे आपन पुतउ के कुइंयासारे पानी ओगरा बनाय के बइठावल। पुतउ बात मानी के कुइंया पासे एगो कुंबा में बइठइल रह हलीक। एक दिन पाँच गो डहर चलवइया राही डहरे चलल आव हलथ । ओखिन के पियास लागल रहे । कुइंया देखी के पानी टाने ले एक झन बाल्टी उठाय के पानी टाने खोजल, तखने पहरदार पुतउ पूछइल–कोन रे ! कोन पानी टाने खोज हे ?

हाम लागी एगो राही गो ! ऊ कहल।

''कोन राही ? दुनियांये तो दुइये गो राही हथ, तो कह, तोञ् कोन राही लागें ? एकर जबाब दे, तबे पानी पीबे, नी तो दूर हेइ जा। ''ऊ जबाब नी दिये पारल से ले ऊ बिना पानी पी ले आगू बढ़ल।

दोसरका पानी भोरे ले आगू बढ़ल। तब ओकरा पूछइल – कोन रे ! कोन पानी टाने खोजे हे ?

''हाम लागी एगो मरद गो'', ऊ कहल।

''दुनियांये तो दुइये गो मरद हथ, तो कह, तोञ् कोन मरद लागें ? तबे पानी टानबे, नी तो दूर हेइ जा ।''

ऊ सोचंल–हाम तो एके गो मरद जाइत जानही ! मगुर ई दुगो कहहीक, तो हाम एकर का जबाब देब। से नी बिना पानी पीले चली जाऊँ, आर बिना पानी पीले ओहो आगू बढ़ल।

तेसरका पानी टाने खोजल तखने ओकरो पूछइल कोन रे ? कोन पानी टाने खोज हे ?

ऊ कहल – हाम लागी एगो जबरजस, गो !

दुनियांये दुइये गो जबरजस हथ। कह तोञ् कोन जबरजस लागें ?

ओहो कोनो जबाब दिये नी पारल, से कही के ओहो बिना पानी पीले आगू बढ़ल।

चउथा झन अबरी पानी टाने ले बाल्टी उठावल तो ओकरो ओहे सवाल पूछइल – कोन रे ? कोन पानी टाने खोजहे ?

ऊ कहल – हाम लागी एगो गरीब गो।

ऊ कहइल – दुनियांये दुइये गो गरीब हथ, कह तोंञ् कोन गरीब लागे ? कह तब पानी टानबे, नी तो चल दूर हेइ जा। ओहो जबाब दिये नी पारल, आर बिना पानी पीले आगू बढ़ल।

अबरी पाँचवाँ आगू बढ़ल तो ओकरो ओहे सवाल करइल, तब ऊ जबाब देल–हाम लागी एगो बुड़बक गो !

अरे ! दुनियाये दुइये गो बुड़बक हथ, तो कह–तोञ् कोन बुड़बक लागे ? कह तबे पानी पीबे, नी तो तोंहू भाग हिंया से।

ओहो जबाब दिये नी पारल आर आगू बढ़ल ।

ई नीयर ऊ पाँचों राही बिना पानी पीले चली गेला। ई देखी के देखवइया अदमी सब राजा के जाइके कही देला कि मीरा! आइझ कुंइयां में कोने पहरा दे हल कि ककरो पानी पीये नी देलेन ?

राजा पूछल– किना ले नी पानी कोय पीला ?

मीरा ! राही तो पानी टाने ले बाल्टी उठावहला, मगुर बिना पानी टानले चली जा हलथ, ई देखी के हामीन हायचोक हेइ गेली!

अच्छा! जा ओखिन के हंकाय लाना, पूछल जाइत। सिपाही कुदला आर जकरा जहाँ पावला, घुराय के लेले अइला। राजाक बात रहे, से ले पाँचों राही घुरला। राजा पूछल कि कोन दोसे तोहिन पानी नी पीलाय! तखन ओखिन बारी–बारी से आपन बात सुनावला कि

पानी टाने ले बाल्टी तो उठावहली मुदा तखने कुंइयां पासे कुंबाञ् बइसल एगो बेटी छउवा हामीन से सवाल करलीक। हामीन जबाब नी दिये पारली, से ले आगू बढ़ले गेली।

ओखिन के बात सुनी के राजा सिपाही के आदेस देल कि जा, कुंइयांसारेक कुम्बा से ऊ बेटी छउवा के हकांय लाना। पूछल जाइत।

सिपाही सब जाइके ऊ बेटी छउवा के हंकाय लानला ।

पानी नी पीये देल कर कारन राजा पूछल।

राजाक पुतउ कहइल – ससुर गो ! कोनो बात कर फइसला अइसे तइसे नी हेवहे। तोंहे राजा लागाय, निआय कराहाय, झगरा मेटावा हाय, तोंहे चलते–भूलते कोनो बात काहे करा हाय। निआय खातिर बइठकी हेवेक चाही, तब कोनो जबाब देल जाइत ?

सभा बइठावा, जिरह, बहस करावा, तब फइसला दाय, तोंहे काहे आपन गरिमा खतम करी रहल हाय ? आर सूना। हामर गलती हेवत तो हाम सजा भुगते ले तइयार ही, राजी ही, मगुर हामर एगो शर्त्त हे, जदि हामर सवाल गलत हेवत तो हाम घोड़ाक लीद उठावे ले राजी ही आर जदि हामर सवाल ठीक हेवत आर ओकर जबाब ओखिन का, तोहिनो नी दिये पारबाय तो तोहिन घोड़ाक घास काटे ले तइयार रहा। ई शर्त्त मंजूर हे तो सभा बइसावा, नी तो छोड़ा बात के !

पुतउ कर बात सुनी के राजाक एड़ीक लहइर चाँदी चढ़ल आर सोचल, ई हामरे पुतउ हामरे से अइसन सवाल करहीक, एकर फइसला जरूर हेवेक चाही। तुरते सिपाही के हुकुम देल कि एखने जुनजुनार बइठकी हेवत, से जल्दी सोब सभा में आवा। सोब सभाक अदमी जल्दी–जल्दी सभा में अइला आर सभा शुरू हेइ गेल। सभा में सोब बइसला। ऊ पाँचों राही के हंकावल गेल। एक बाठे राजाक पुतउ ठढ़ुवाइल।

राजा पहिलका से पूछल – तोञ् का कहले रहें ?

ऊ कहल – हाम एगो राही लागी, एहे कहल रही।

राजा पुतउ से कहल – ठीके तो ई कहल रहे कि हाम एगो राही लागी।

तब किना ले नी पानी पीये देलें ?

ससुर महराज! तनी दिमाइग से बात करा आर सभा में बइसल सोब अदमी, तोहिनो बिचार करा कि ई सचे एगो राही लागे ? हाम एकरा पूछल रही कि दुनियांये दुइयो गो राही हथ तो कह, तोञ् कोन राही लागे ?

ई कहे नी पारल कि ई कोन राही लागे आर वइसहू ई राही नी लागे। सभाकर अदमी सुनी के दंग हेला आर दोसर कर मुँह देखे लागला, कोन कहत कि दुनियांये दुइये गो राही हथ। पचास तइक गिनेक पारी तक समय देल गेल। कोय कहे नी उठला कि दुनियांये दुइये गो राही हथ आर राजाक पुतउ कर सवाल गलत हे, ए हो राजी नी हेल। समय बीतल तब ऊ कहइल – सूना। राही माने राह चलवइया आर राही सही में ओहे हे जे सदा चलते रहहे। दुनियांये राह चलवइया दुइये गो हथ – चाँद आर सूरज, ई दुइयो हर हमेशा चलते रह हथ। अदमी तो बेस तरी दु दिन नी चले पारहे आर आपन के राही कहहे। ई तो एकदम झूठ बात हे। सभाक सेाब अदमी राजाक पुतउ के बात सच मानला।

दोसर झन के बोलावल गेल आर पूछल गेल – कह तोञ् का कहल रहें ?

ऊ कहल – जखन ई पूछल कि तोञ् कोन ? तखन हाम कहली – हाम एगो मरद लागी।

राजा कहल – ठीक तो, ई तो मरदे लागे। ई तो ठीके कहल रहे। राजाक पुतउ कहइल – हामर सवाल रहे कि दुनियांये तो दुइये गो मरद जाइत हथ, तो तोञ् कह, तोञ् कोन मरद लागें ? एकर जवाब ई दिये नी पारल। हाम तोहिने से पूछहियों कि दुनियायें दुइये गो मरद जाइत कोन–कोन हथ ?

सभाकर कोय अदमी जबाब नी दिये पारला, तखन कहला – तोंही कही सुनावा गो। हामीन तो जानही एके गो मरद जाइत हेवहे मगुर तोञ् दु गो कहाहाय तो कहा – कोन–कोन दु गो मरद जाइत हथ ?

ऊ कहइल–सूना! मरद जाइत में पहिल मरद ऊ हे जकर ठीन दूध (स्तन) नखे, दोसर मरद ऊ हेवहे जकर ठीन दूध (स्तन) हेवहे। एकर में घोड़ा पहिल मरद जाइत हे, काहे कि ओकर ठीन स्तन नी हेवहे, बाकी सब दोसर किसिम के मरद जाइत हेवहथ। ओहे तो हाम पूछल रहियइ कि तोञ् कोन मरद लागे ?

तेसर झन कहल रहे कि ''हाम लागी जबरजस''।

मगुर ई कइसन जबरजस लागे ? खाली जबरजस कहल्ही कोय जबरजस नी हेवहे। जबरजस तो ओकरा कहल जाहे – जे कहियो ककरो बात नी माने हे। ककरो बस में नी रहहे, आर ना ककरो कहल मान हे। ई हथ – हवा आर पानी। एखिन दुइयो अदमीक बसे नखत। आपन परभाव फरक–फरक देखावहथ।

चउथा झन के पूछल पर कहल रहे कि हाम लागी एगो गरीब।

तखन हाम पूछल रही कि तोञ् कोन गरीब लागे ? दुनियांये दुइये गो गरीब हथ। एकर जबाब ई नी दिए पारल। एकरो जवाब कोइ नी दिये लागल तखन ऊ कहइल – दुनियांये दुइये गो गरीब हथ – लखी आर लक्ष्मी। लखी माने बेटी छउवा आर लक्ष्मी माने गरू–डांगर। बेटी के जकर संग डिहराय देहे ओकर संग ओकरा जाइ पड़हइ। ओइसने गरू–डांगर के जकर संग डिहराय दाय ओकरे संग बिना बिरोध करले चले लागहथ। एखिन ले गरीब ई दुनियांये आर कोय नाञ।

आखरी माने पाँचवाँ झन कहल रहे कि हाम लागी एगो बुड़बक। मगुर एखन दुनियाये दुइयो गो बुड़बक हथ तो ई तेसर बुड़बक कहाँ से आइल ?

ओखिन पूछला कहा गो कहा दूगो बुड़बक कोन–कोन हथ ?

ऊ कहइल – दुनियाये एखन दुइयो बुड़बक हथ आर ऊ हाथ–पहिल में हामर ससुर राजा आर दोसर बुड़बक हथ ओकर देवान। ई सुनते सोव हायकाठ हेइ गेला आर तारा ऊपरी कहे लागला – कइसे गो कइसे ? एखन तइक तोहें जे कहलाय, हामीन मानलियो मुदा हामीन कर राजा आर ओकर देवान बुड़बक कइसे हेला एकरा साफ से फूरछाय के कहा।

ऊ कहे लागइल – हामर ससुर आर देवान एखन दुनियांये सोब ले बेसी बुड़बक ई ले हथ कि एतना सिपाही, चउकीदार रहइतको पुतउ के कुंइयांसारे पानीओगरा बनाय के राखल हथ। ई होसियार राजाक पछान हे इया बुड़बक राजाक ? आब कहा – हामर सवाल आर जबाब में कही खोट हे तो तोहिन हमरा सजा दाय, नी तो राजा (ससुर) हामर घोड़ाक घांस काटता। सभाक अदमियों, तोहिन हामर सवाल कर जबाब नाञ् देलहाय से ले तोहिनों के ई दरबारे रहेक दरकार नखोन।

राजा सरम से मुंड हेठ करी देल आपन बुड़बकाही आर बुझनगर पुतउ कर पासे।

2. बेस बेवहार

बोन धाइरे एगो गाँव रहे। ऊ गाँवे एगो राँडी जनी रहीक। ओकर दु गो बेटी रहथी। बड़कीक नाम सुकरी आर छोटकीक नाम मंगरी रहइ। राइत हेवइ, सुतेक पहर बिना मतलबे दुइयो लड़े लागथ। सुकरी मंगरी के गारी देइ के कहइ – तोरा बाघो साँपो नी टानी के लेगहउ ? कहियों पावबो नी करहउ ?

एगो बाघ सांइझ पहर गाँव बाठे आय के घारेक पिछवाइर बाठे भुलल चले कि राइत–अंधारे छगरी–पठरु घार ले बहराता तो झटके धारी के बोन बाठे लेगी के खाबेन।

एहे पहर सुकरी मंगरी के गारी दिए लागइल आर बाघवा सुनी–सुनी रहे। जइस्ही मंगरी बाहइर बहराइल तइस्ही बाघ धाइके मंगरी के कहल – चाल हाम तोरा लेगे आइल हिअउ। चाल हामर घार। रोज गारी सुनी–सुनी के मंगरीक जान पीताइ गेल रहे, बाघेक बात सुनी के का मन देलइ कि ऊ सोझे ओकर संग चले लागइल। थोरेक धूर जाइके बाघ ओकरा पूछल – कह तो, हाम कइसन देखाही ? ऊ आपन संगी जानी के कहइल– तोञा तो राजा नीयर देखा हाय। बाघ सुनी के बड़ा खुश हेल आर मने–मन सोंचे लागल कि एहे हामर मन चाहा संगी बने पारइत। बाघ बड़ी दुलार से लेइके आगू बढ़ल। बोन नझीक पोंहचल बाद फिन पूछहइ – हामर मुँहवा कइसन देखा हइ ?

मंगरी ओकर मधुर बोली सुनी के कहइल – तोहर मुँह तो चाँद–सूरज नीयर देखा होन। बाघ ओकर जबाब सुनी के बड़ी खुस हेल, रीझी गेल, आर आपन बहु बनाय के आपन खोह लेले गेल।

बोन धाइर पेठिया ;बाजारद्ध जाइक डहर रहइ। डहरे अदमी के पेठिया जाइत देखी के मंगरी कहइल – हे राजा! आइझ पेठियाक दिन लागइ, से जा पेठिया से चाउर–उर लानबाइ तबे नी खाइब!

बाघ सुनी के बड़ा खुश हेल आर कहल – ठीक हे, हाम पेठिया जा ही, तोञा् घारे बेस तरी रहबे। ई कही के डहर धाइर गेल आर झूरे लुकाय रहल। जखन अदमी गोठ कर गोठ पेठिया जाइ लागला, तखने कहे लागल – हाम बोनकर राजा लागी। आवते–जाते हामरा खायेक चीज – दाइल, चाउर, तेल, नून, मसाला, देले जबाय नी तो हाम गाँवेक गरू–काड़ा, छगरी–पठरू आर नी तो अदमियों के धाइर के खाबोन। एखन हाम नरम हइ के कह हियोन से ले हामर बात मानी के देले जाबाय। अदमी सब घुरेक पहर कुछ नी कुछ लानी के देले गेला। सांइझ पहर मोटा बांधी के पीठे लादल आर आपन खोहे ले ले आइल। मंगरी ओकर मेहनइत आर प्रेम देखी के राइते बाघ कर गोड़ जांती–चीपी दिये लागइल। बाघो ओकर सेवा देखी के बेस–बेस गहना–गुरिया लूगा–फाटा पिंधावे लागल। ई नीयर ढ़ेइर दिन बीती गेल।

एक दिन ऊ बाघ से कहइल–हामर हियां आइल ढ़ेइर दिन हेइ गेल, से हाम चाहही दू–चार दिन नइहर जाइ खोजही। बाघ खुसी–खुसी ओकरा सांइझ पहर लेगी राखल आर जल्दीये घार घुरबे ई कहल।

मंगरी के बेस–बेस लूगा आर गहना पींधल देखी के बड़ा खुश हेला, मगुर सुकरीक मन पिरपिराय लागल, डाँह हेवे लागल। राती सुतेक पहर मंगरी से पूछे लागइल तो मंगरी बाघेक प्यार कर बात सोब बतावइल। सुनी के ओकर मने आरो डाँह हेवे लागल आर कहइल – अबरी तोञ् हामरा गारी देबे, हामु बाघ संगे तोरे नीयर जाइब।

कइ दिन बीतल बादे रातीक पहर मंगरी सुकरी के गारी दिये लागइल कि तोरा बाघो–साँपो नी लेगहउ। बाघ पेछुवाइर धाइरे सुनी–सुनी रहे। जइस्ही सुकरी केंवार खोली के बहराइल तइस्ही बाघ धारल आर कहल – चल, हाम लेगे
आइल हिअउ।

दुइयो कर रूप, रंग, ऊँचाई करीब एके रहेन आर दोसर आंधारो रहइ, सेइले चिन्हे नी पारल आर धाइके लेले चलल। थोरे धूर गेल बादे बाघ पूछहे – हाम कइसन देखाही ? सुकरी कहइल – बाघ लागें तो कइसन देखाबे ? बाघ नीयर देखा हे। बाघ मनेमन दाँत पीसे लागल आर सोचें लागल अबरी एकर मती खराब हेइ गेल। बोन धाइर पोंहचल तब फिन पूछल – 'हामर मुँहवा कइसन देखाहइ ?'' सुकरी कहइल – तोर मुँहवा डुभा नीयर देखाहउ। ई बात सुनी के बाघेक एड़ीक लहइर चाँदी चढ़ल आर ओहे ठीन ओकरा झपटल

आर पटइक–पटइक के मोराय देल, चीरी फारी के खाय गेल। से हे ले कहल जाहे – **''एहे मुँह भात आर एह मुँहे लाइत खाहथ।''**

3. तीन गो झूठ

एगो राजा रहे। ओकर एके गो बेटी रहइ। एक दिन कोनो बाते झूठ बोलइल। तखन राजा सोंचल कि एकर बिहा हाम ओकरे संग करी देब, जे तीन गो झूठ बोले पारत। ई बातेक ढ़ोल पीटाय देल।

तीन गो झूठ बोले खातिर अदमी राजा घार आवे लागला। मुदा जे भी झूठ बोले ओकरा ऊ राजा इया ओकर देवान सत साबित करी देथ। ई बात के एगो छगइर गोरखिया सुनल।

ऊ छगइरगोरखियाक एकले मोटे आयो रहइ। ऊ आपन आयो से कहल – आयो, हाम्हु राजा घार झूठ बोले जाइब आर तीन गो झूठ बोली के राजाक बेटी से बिहा करब। बूढ़ी आयो डेराइल आर कहइल – नाञ् रे बेटा! का तोञ् पगलाइल हे जे ई बात के मने सोंचले। राजा तोरा मारी के मोराय देतउ रे !

नाही आयो, जबे हाम झूठ नी बोले पारब तबे नी ऊ हामरा मारत?
हाम सचे कहहिअउ आयो, जे झूठ हाम बोलब ओकरा ऊ राजा इया ओकर देवान सच करेहे नी पारता।

आंय रे खइटकटवा तोरा मोरेक लिखल हऊ! झलाइ के बुढ़ी कहइल। ऊ छगइरगोरखिया राजा घार गेल आर कहल – हाम्हु तीन गो झूठ बोलब। लाव–लस्कर कहला – भाग रे ! तोञ् झूठ बोले पारबे ? तोरा तो छगरिये चरावते दिन जाहउ तो तोञ् कहाँ ले झूठ बोले सीखल हें, से ले भाग, नाञ् जउ हुंवा।

ऊ कहल – हाम तो जइबे करब। जखन तीन गो झूठ बोले नी पारब तखन तोहिन के जे बुझातोन से सजा दीहा। मुदा हामरा एक झीक जाय तो दाय।

ओकर जीद देखी के कहला – जाय दाहाक सार के, कसुक ई झूठ
बोली के राजा के पतियावे पारत तो! ऊ राजा ठीन गेल, हाथ जोड़ी के लाम्बीतान हेइके गोड़ लागल आर कहल – मीरा! हाम्हु तीन गो झूठ बोले ले तोहर ठीन आइल ही, से हामरो बात सुनी लाय।

राजा कहल – ठीक हे सुनाव।

ऊ सुनावे लागल – हामर आजा कर एके गो बावन एकड़ कर टांइड रहई। कहूँ खेंचा नी रहई। हामर आजा भिनसरिये जोते जाय आर एड़बेरिया हेते हेते जोती के एतना गुलगुलाय दे कि एगो अंडा के ऊपर ले गिरावले चभके एक हाथ भीतर चली जाय। तबे ओकर में ऊ कोनो लगावे । एक झीक जोती के गुलगुलाबल आर ठीक मांझे–मांझ एगो सइरसोक दाना रोपल। ऊ दाना अंकुरल जनमल आर गाछ बनल। ऊ गाछ एतना बोड़ भेल कि गोटे टांइड़ के टाइप लेल। ऊ गाछे एतना फोर लागल कि ओकरे दानाक तेल आइझो तइक गोटे दुनियाये चली रहल हे।

राजा सुनी के कहल – ई तो एकदम झूठ हे, कहूँ जगन सच नखे। भले बावन एकड़ कर टांइड हेवे पारे मगुर कोइयो नी एड़बेरिया हेते–हेते जोती के एतना गुलगुलावे पारत कि ओकर में अंडा गिरावले एक हाथ भीतर डूबत आर ना सइरसो कर एगो दानाक गाछ एतना बोड़ हेतक कि ओकर दानाक तेल एतना दिन चलत। चाल, तोर ई झूठ के हाम मानी लेलीअउ।

दूसर झीक ऊ छगइरगोरखिया सुनावे लागल – हामर आजा जे सइरसोक गाछ रोपल

रहे, जकरा तबरी कहल रही, ओहे गाछे ढ़ेलुआ टांगल रहे आर हुंआ बइसी के झूके हल। आगू बढ़े तखन गोड़वा से सरगवा के अइसन धोकलई कि ऊ आगु बढ़ी जाय आर घुरे तखन पाछु बाठे धेकलई, एहे नीयर धेकलते–धेकलते ऊ सरगवा के एतना धूर दुइयो बाठे पोंहचाय देल जहाँ कोय पहुँचे नी पारतक।

राजा कहल – ई तो एकदम खांटी झूठ हे। कइसन बुड़बक अइसन बात करहे। कहुँ ढेलुवा में चढ़ी के सरगवा के कोय छुवे पारत ?
जतना जीव–जन्तु हथ सोब एकरे हेठें हथ ओकरा धेकले पारत ? चाल एहो झूठ के मानी लेलिअऊ।

दुगो झूठ कहल बादे तो ओकर खुसीक ठेकान नाञ्। आब ऊ सोंचे लागल कि हाम आब राजाक बेटी के जरूर बिहा करब आर दहेजे आधा राइजो लेब। घारे आइके आपन आयो से खुस हेइ के सुनावल आर तेसर झूठ खातिर उपाय सोंचे लागल। सोंचते–सोंचते ओकरा बुइध आइल आर आपन आयो से कहल कि जांय गो राजा घार बाठे, कहुं ले टुटल–फाटल एगो डिमनी लेइके आन, तबे देखबे हामर कमाल।

बुढ़ी बेचारी गेइल आर खोइज–खाइज के एगो टूटल खून डिमनी ले ले आइल। छगइरगोरखिया डिमनी के लेले गेल आर सुनावे लागल – हामर आजाक बाप (परआजा) आपन पहरे बड़का गो राजा रहे आर तोहर आजा एकदम गरीब। हामर परआजा बड़ा दयालु रहे, से ले ऊ बड़ी दान–पूइन करहल। एक दिन तोहर आजाक गरीबी देखी के दया आइल आर एक डिमनी चाँदीक रूपिया देल। देखा ऐहे डिमनिये देल रहइ, से खातिर एकरा हामीन जोगाय राखले ही आर मोरेक पहिले आपन राइजो ओकरा देइ राखल आर गेल सिकार खेले, किसमइत खराब, ऊ हुन्द्ही माराय गेल। ई बात आजा के कही राखल रहे, ओहे बतिया हामरा आजी कहल हिक।

राजा कहल – ई तो एकदम झूठ बात। हामीन हियांक पुरखइती राजा ही। एकर परआजा ना कहियो राजा रहइ ना ओकर से हामर आजा कहियो रूपिया लेले रहइ ना राइज ओकर से पावले ही, ई तो एकदम आयां झूठ हे।

छगइरगोरखिया कहल – मीरा। ई झूठ हे तो बेटी बिहा दाय आर सच हे तो हामीन कर रूपिया आर राइज देई दाय।

राजा कहल – हाम हाइर मान लेलिअऊ। से ले एकर संग राजकुमारीक बिहा दिये ले सोब सरजाम करा।

शर्तेक रूपे राजा आपन बेटीक बिहा छगइरगोरखिया संग करी देल आर दहेजे आधा राइजो देल।